P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-1) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

पर्यटन एवं मूलभूत सुविधाएं : उदयपुर जिले का विशेष अवलोकन

रश्मि गोयल
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्षा,
भूगोल विभाग,
शम्भु दयाल पी.जी.कालेज,
गाजियाबाद

सारांश

आज की दुनियाँ के रफ्तार मे मानव संसार–रूपी सागर में डूब गया है। इसी झंझट से कुछ पल दूर रहने के लिये एवं मन को चंचल (प्रसन्न) करने हेतु कहीं एकांत जगह जाना चाहता है। अतः पर्यटन करना चाहता है।

इस बढ़ती आबादी में पर्यटन करने वालों की संख्या दिन व दिन बढती जा रही है। इसी कारण पर्यटन (Tourism) व्यवसाय बढ़ना स्वाभाविक है। इस पर्यटन व्यवसाय में पर्यटक तथा पर्यटन स्थान दोनों का विचार करना जरूरी है। पर्यटक सुख एवं शान्ति से अपना जीवन पर्यटक स्थान पर बितायें। यह एक मात्र संभावना सभी के मन में रहना चाहिए। पर्यटक को रहने के लिये निवास, भोजन व्यवस्था, जल आपूर्ति, बिजली, नाट्य मन्दिर, सिनेमा यह सभी पर्याप्त मात्रा में सुविधा देकर अपना कर्तव्य पूरा करना चाहिए।

मुख्य शब्द : पर्यटन, पर्यटक।

प्रस्तावना

वर्तमान समय में 'पर्यटन' किसी भी राष्ट्र के लिये आय का प्रमुख साधन माना जाता है। यह किसी भी राष्ट्र के आय में वृद्वि में उल्लेखनीय भूमिका निर्वाह करता है। यह विदेशियों से सम्बन्ध स्थापित कराता है। जिससे भविष्य में विदेशियों द्वारा आर्थिक सहायता मिलने की संभावना रहती है। यह अन्य महत्वूपर्ण उद्योग हेतु नए बाजार ढूंढता है या प्रदान करता है। अतः हम संक्षेप में कह सकते हैं कि वह आर्थिक किया जो मॉग का निर्माण करता हो, एवं नए – नए उद्योगों हेतु बाजार ढूंढता हो 'पर्यटन' कहलाता है। पर्यटन अर्थात् घूमना – फिरना मानव की एक स्वाभाविक प्रवृति है। मानव द्वारा विभिन्न उद्देश्यों से पर्यटन किया जाता है पर्यटन द्वारा जहॉ हमें आनन्द की अनुभूति होती है वहीं विभिन्न प्रकार की जानकारियॉ भी प्राप्त होती हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

हम पर्यटक स्थलों पर आनन्द की प्राप्ति के लिए तथा विभिन्न प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त करने के उद्देश्य से जाते हैं।

अध्ययन क्षेत्र

भौगोलिक, ऐतिहासिक, एवं सांस्कृतिक परम्पराओं से भरा राजस्थान राज्य में उदयपुर गुजरात सीमा के पास, राजस्थान के दक्षिणी भाग में स्थित है। यह अरावली रेज से घिरा हुआ है जो इसे थार रेगिस्तान से अलग करता है। यह दिल्ली से 655 किमी0 और मुम्बई से लगभग 800 किमी0 दूर लगभग दो प्रमुख भारतीय मैट्रो शहरों के बीच में स्थित है। इस जिले का विस्तार :–

1.`	Latitude	:	$24.5854^{o}N$
2.	Longitude	:	$73.7125^{o}E$
3.	Area	:	$37km^{2}$
4.	Height of sea level	:	600 mtr. (2000 ft.)
5.	Population	:	451100

विषय विवेचन

पर्यटन एक व्यवसाय होते हुये भी सेवा है। जितनी सेवा अधिक देगें उतने पर्यटक आकर्षित होते हैं। इसका नतीजा पर्यटन व्यवसाय बढ़ाने में होता है। इसलिये कुछ उद्देश्य सामने रखते हुये कारोबार करना चाहिए।

Michael Chiam, Geography Soutar and Alvin yeo's (2009) इस पेपर में ऑनलाइन और ऑफलाइन ट्रेवेल पैकेज Preferences के विषय में बताया गया है पर्यटक ऑनलाइन पैकेज पसन्द करते हैं या ऑफलाइन। इस पेपर में price का भी काफी बड़ा महत्व है। पर्यटक की Preferences में travel agent और airlines reputation का काफी बड़ा

योगदान है। अध्ययन के मुताबिक ऑनलाइन और ऑफलाइन में ज्यादा अन्तर नहीं है।

अध्ययन का उद्देश्य

Molina (2010) इस पेपर का अध्ययन करने के बाद यह बताया गया है कि किसी स्थान को प्रसिद्ध करने के लिए Tourist Brochure का प्रयोग किया जाता है। Printed Material and Infarmation Bulletins का प्रयोग पर्यटक को Update करने के लिए किया जाताहै।

उदयपुर जिले में कुछ पर्यटन स्थल हैं उनकी संक्षिप्त जानकारी देते हैं।

कुम्भ महल

यह भव्य महल विशिष्ट आवासीय राजपूत स्थापत्य की झलक प्रदान करता है। पूर्ववर्ती इस महल में महाराणा कुम्भा (1433–68 ई0) ने कई परिवर्तन एवं परिवर्धन किए। महल में प्रवेश हेतु पूर्व से बड़ी पोल एवं त्रिपोलिया दरवाजे होकर दक्षिण में स्थित खुले आंगन से होते हुये दरीखाने तक पहुँचा जा सकता है। महल के मुख्य परिसर में स्थित सूरज, गोखरा, जनाना महल, कांवर पड़े का महल व अन्य आवासीय भवनों मे प्रवेश हेतु दरीखाने से छोटा प्रवेश द्वार है। महल की दीवारें सुदृढ पत्थरों से निर्मित हैं। जिसकी बाह्य दीवार को अनेक प्रकार के अलंकरणों से सजाया है।

बागोर की हवेली– संग्रहालय

बागोर की हवेली का निर्माण मेवाड़ के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अमर चन्द बडवा द्वारा 1751 से 1778 के दौरान करवाया गया । श्री अमरचन्द बडवा के निधन के बाद यह हवेली महाराणा मेवाड़ के निधन के बाद यह हवेली महाराणा मेवाड़ के छोटे भाई महाराजा नाथ सिंह के नियंत्रण में आई। सन 1828 से 1884 के दौरान बागोर ठिकाने से महाराणा सरदार सिंह, स्वरूप सिंह, शंभु सिंह एवं सज्जन सिंह गोद लेकर मेवाड़ के महाराणा बनाए गए। पिछोला झील के किनारे गणगौर घाट का निर्माण महाराज नाथ सिंह जी के वारिस महाराज भीम सिंह ने करवाया। महाराज शक्ति सिंह ने सन 1878 में गणगौर घाट के त्रिपोलिया (नक्काशीदार तीन दरवाजों) पर कॉच की कारीगरी से सज्जित महल का निर्माण करवाया । सन 1930 में यह हवेली मेवाड राज्य द्वारा अधिगृहीत की गई तथा इसे राज्य का अतिथि गृह बनाया गया । स्वतंत्रता के बाद राजस्थान सरकार ने राज्य कर्मचारियों के आवास के लिये इस हवेली का प्रयोग किया। सन 1986 में यह हवेली जर्जर हालत में पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र को उसके कार्यालय के लिये हस्तांतरित की गई। इस हवेली में 138 कमरे, झरोखे गलियारे, चौक एवं लम्बे चौड़े बरामदे बने हैं। पॉच वर्ष के कठिन जीर्णोदार, कार्य के बाद इस हवेली को एक संग्रहालय का रूप दिया गया । हवेली के बैठककक्ष, शयनकक्ष, स्नानागार, आमोद – प्रमोदकक्ष, संगीतकक्ष, पूजाघर, भोजनशाला आदि में राजसी जीवन शैली, वास्तुशिला तथा सांस्कृतिक मान्यताओं से इसके पुरातन स्वरूप को संरक्षित किया गया है। बागोर की हवेली ऐतिहासिक एवं प्राचीन इमारत के पुर्ननवीनीकरण एवं संरक्षण का ज्वलंत उदाहरण है। इस हवेली में धरोहर नाम का सांस्कृतिक शो 7 से 8 बजे तथा 8 से 9 बजे रात को प्रतिदिन होता है।

मन्दिर श्री एकलिंग जी, कैलाशपुरी
अंतर्गत श्री एकलिंग जी ट्रस्ट सिटी पेलेस, उदयपुर

मेवाड़ के शासकों के इष्टदेव भगवान शिव का यह निजी मंदिर उदयपुर से 22 किमी0 उत्तर में स्थित है एवं देश के अत्यंत महत्वूपर्ण तीर्थो में से एक है। मूलतः यह मन्दिर आठवीं शताब्दी मे बाया रावल द्वारा बनाया गया परन्तु आक्रांताओं ने उसे आंशिक रूप से नष्ट कर दिया । महाराणा मोकल द्वारा मंदिर का पुनर्निर्माण प्रारम्भ किया गया । मन्दिर के दक्षिण द्वार पर लगी प्रशस्ति के अनुसार मन्दिर का वर्तमान स्वरूप महाराणा रायमल (1473–1509) द्वारा प्रदान किया गया । आंतरिक गर्भगृह में स्थित अत्यंत आकर्षक श्याम संगमरमर से शिल्पित चतुर्मुखी शिवलिंग के अंत में स्थापित कियागया । कठघरे और गर्भगृह के बीच के द्वार पर वर्तमान श्री जी हुजूर अरविंद जी मेवाड (1984 से अनवरत) ने किवाड़ों पर चॉदी की परत चढ़वाई। परिसर के मंदिरों की प्राचीनता को अक्षुण्ण रखते हुये श्री जी ने मंदिरों के जीर्वोद्वार विकास एवं सौंदर्य वृद्वि के कई प्रयास किये है। मुख्य मन्दिर के कटघरे में आम दर्शनार्थियों का प्रवेश वर्जित है।

पद्मिनी महल

पद्मिनी महल किले मुख्य भवनों में से एक है। राणा रतन सिंह की पत्नी पद्मिनी जिसको पदमावती के नाम से भी जाना जाता है अत्यंत सुन्दरी परिशुद्ध, चतुर एवं पराक्रमी थी। यह महल पदमिनी तालाब उत्तरी तर पर स्थित है। तालाब के मध्य में मेहराब युक्त प्रवेश द्वार के साथ तीन मंजिला भवन है जिसे 'जलमहल' कहा जाता है । महल का मुख्य द्वार पश्चिम की ओर है जिसका ऑगन छोटे कमरों की एक सीधी पंक्तियों से घिरा हुआ है। दूसरे सलंग्न आयताकार आंगन के दक्षिण दिशा में वृत्ताकार हॉल स्थित है जहॉ से जलाशय की सुन्दरता दिखती है। तीसरे आयताकार आंगन के दक्षिणी भाग में दो मंजिला कक्ष स्थित है।

इस पर्यटन स्थल के अलावा सिटी पैलेस, भारतीय लोक कला संग्रहालय, सहेलियों की बाड़ी, फतेह सागर झील, पिछोला झील यह स्थल पर्यटकों के लिये आकर्षित करती है। इस पर्यटन स्थलों में पर्यटकों की संख्या निम्न प्रकार है।

क0स0	पर्यटन संस्थान	पर्यटकों की संख्या
1	कुम्भ महल	11,00,000
2	बागोर की हवेली	1,00,000
3	मन्दिर श्री एकलिंग जी कैलाश पुरी	4,50,000
4	पद्मिनी महल	10,00,000
5	सिटी पैलेस	14,00,000
6	भारतीय लोक कला संग्रहालय	7,00,000
7	सहेलियों की बाड़ी	6,50,000
8	फतेहसागर झील	6,00,000
9	पिछोला झील	6,00,000

ऊपर दिये गये पर्यटन अवस्था से यह कहा जा सकता है कि कुम्भ महल, पदमिनी महल, सिटी पैलेस में पर्यटक अधिक है परन्तु पर्यटकों की सुविधा सभी जगह एक समान नहीं है। इसका परिणाम पर्यटक संख्या में हाने

पर्यटन स्थलों पर मूलभूत सुविधाएं

पर्यटन स्थल	पानी आपूर्ति	निवास	बिजली	शौचालय	जलपान व्यवस्था	बाजार पैठं
कुम्भ महल	√	––	√	√	––	––
बागोर की हवेली	√	––	√	√	––	√
मन्दिर श्री एकलिंग जी कैलाश पुरी	√	––	√	√	––	√
पद्मिनी महल	√	––	√	√	––	––

ऊपरी टेबल से देखा जाये तो जिले के पर्यटन स्थलों में सिटी पैलेस, फतेहसागर झील , पिछोला झील जहॉ पर सभी सुविधाएं हैं बाकी सभी जगहों पर पर्याप्त मात्रा में सुविधा उपलब्ध न रहने से पर्यटकों के आने में परेशानी होती है।

पर्यटन का विकास

देश में पयर्टन को बढावा देने के लिये नीति आयोग ने स्पेशल टूरिज्म जोन (एसटीजेड) विकसित करने की सिफारिश की है। ये जोन तटीय क्षेत्रों में विकसित किये जा सकते हैं। आयोग ने पाँच 'बीच डेस्टिनेशन' भी विकसित करने का सुझाव दिया है।

नीति आयोग ने 'स्ट्राटेजी फार न्यू इन्डिया एट 75' के दस्तावेज में यह महत्वाकांक्षी सिफारिश की है। केन्द्रिय वित्त मंत्री अरूण जेटली ने हाल ही में यह दस्तावेज जारी किया था। आयोग ने इस दस्तावेज में 2022–23 तक वैश्विक अंतरराष्ट्रीय टूरिस्ट अराइवल में भारत की हिस्सेदारी 1.18 प्रतिशत से बढाकर तीन प्रतिशत करने का लक्ष्य रखा है। साथ ही विदेशी पर्यटकों की संख्या भी इस अवधि में बढाकर 1.2 करोड़ करने और घरेलू पर्यटकों की यात्राओं को 161 करोड़ से बढाकर 320 करोड़ करने का लक्ष्य भी रखा है। इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य को हासिल करने के लिये आयोग ने पाँच 'बीच डेस्टिनेशन' को स्पेशल टूरिज्म जोन के रूप में विकसित करने की सिफारिश की है

इसके अलावा पाँच विश्व स्तरीय संग्रहालय बनाने का सुझाव भी आयोग ने दिया है। आयोग का कहना है कि सरकार को सिंगापुर के 'एशियन सिविलाईजेशन म्यूजियम' की तर्ज पर देश में संग्रहालय विकसित करने चाहिये। इसी तरह पाँच विश्व स्तरीय नेशनल टूरिस्ट सर्किट भी विकसित करने चाहिये।

पर्यटन क्षेत्र कितना महत्वपूर्ण है इसका अंदाजा इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि वर्ष 2017–18 में भारत के पर्यटन क्षेत्र में लगभग 23 अरब डालर विदेशी मुद्रा अजिर्त की। यह क्षेत्र लगभग 4 करोड़ प्रत्यक्ष व परोक्ष रोजगार देता है।

वाली बढोत्तरी कम–कम बढती जाती है। जहॉ बढोत्तरी बढाना हो वहॉ निश्चित तौरपर सुविधाएँ बढाना आवश्यक हो सकता है।

सिटी पैलेस	√	√	√	√	√	√
भारतीय लोक कला संग्रहालय	√	––	√	√	––	√
सहेलियों की बाड़ी	√	––	√	√	√	√
फतेहसागर झील	√	√	√	√	√	√
पिछोला झील	√	√	√	√	√	√

सूची– – √ उपलब्ध सुविधाएं ,
– –– उपलब्ध नहीं ।

आयोग ने चीन, थाइलैंड, मलेशिया, सिंगापुर, दक्षिण कोरिया, सहित विभिन्न देशों में भारत को पर्यटक डेस्टिनेशन के रूप में प्रोजेक्ट करने के लिये व्यापक प्रचार अभियान भी शुरू करना चाहिये। इसके अलावा पर्यटन के क्षेत्र में कौशल विकास पर भी विशेष जोर देना चाहिये।

निष्कर्ष

उदयपुर जिले के पर्यटन स्थल की मूलभूत सुविधाएं के बारे में अध्ययन करने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि:

1. जिले में पर्यटनो के सभी जगह पर सुविधाएँ एक समान नहीं हैं।
2. अनेक पर्यटन स्थलों के संस्थानों का विकास की ओर ध्यान कम है।
3. धार्मिक पर्यटन स्थलों पर पर्यटक की आर्थिक लूट की जाती है।
4. अनेक जगह पर गाइड न होने से उस स्थल की जानकारी बहुत कम मिलती है।
5. पर्यटन विकास से स्थानीय युवक को रोजगार मिलता है।
6. पर्यटन बढने से स्थानीय जगह मकान, दुकानें वस्तुऐं के कीमत में बढोत्तरी होती है।
7. पर्यटन व्यवसाय से धरातल, जल, वायु, ध्वनि, प्रदूशण बढ़ता है।
8. पर्यटन के माध्यम से विविध जाति–धर्म में एकता दिखाई देती है।

हम 31 दिसम्बर 2018 को परिवार सहित उदयपुर भ्रमण करने के लिये गये वहाँ से उदयपुर के पयर्टन स्थलों के विषय में जानकारियाँ प्राप्त करके लाये।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *पर्यटन के सिद्वान्त– विमल कुमार कपूर*
2. *अमर उजाला*
3. *दैनिक जागरण*
4. *भारतीय पर्यटन– विनोद अग्रवाल*
5. *भारत के पर्यटन स्थल– अरूण सागर*
6. *धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन स्थल–विमल कुमार कपूर*
7. *स्वयं के द्वारा सर्वेक्षण एवं निष्कर्ष*